

LECTURE METHOD

व्याख्यान विधि

व्याख्यान विधि के अन्तर्गत लिखित अथवा मौखिक रूप से सूचनाएँ विद्यार्थियों तक पहुँचायी जाती है। इसलिए इसे कभी-कभी चाक और वार्ता (चॉक एवं टॉक) विधि भी कहा जाता है। इसमें शिक्षक अपनी बात अर्थात् व्याख्यान को पहले से तैयार कर लेता है। इस विधि का उपयोग करते समय शिक्षक को शीर्षक, उप-शीर्षक, मुख्य बिन्दु, मुख्य शब्दों, मुख्य संकल्पनाओं एवं चित्रों को श्याम पट्ट पर लिखना चाहिए। व्याख्यान देते समय शिक्षक को कथन सरल, धाराप्रवाही, रोचक व आकर्षक तथा प्रभावशाली बनाना चाहिए और बीच-बीच में विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के अवसर प्रदान करना चाहिए। विज्ञान शिक्षण में इसका सम्पूर्ण रूप से उपयोग करना सही नहीं है, फिर भी कई स्थितियों में व्याख्यान विधि से शिक्षण कर सकता है। उदाहरण के लिए जब नए विषय-वस्तु को प्रस्तुत करना हो, अमूर्त अवधारणाओं की व्याख्या में, वाद-विवाद में, चर्चा में, किसी प्रकरण के मुख्य बिन्दुओं की व्याख्या करने में। प्राचीनकाल से यह शिक्षण की सबसे प्रचलित विधि है। प्राचीन समय में पुस्तकों और साधनों का अभाव होने के कारण, शिक्षक इस विधि को अत्यधिक उपयोग में लाते थे। परंतु आज हम बालक को केन्द्र बिन्दु मानकर पढ़ाते हैं तो इस व्याख्यान विधि को उतना महत्व नहीं दिया जाता परंतु विशेष परिस्थितियों में इसका प्रयोग किया जा सकता है। इस विधि के उपयोग में शिक्षक को बहुत सावधानी लेनी चाहिए क्योंकि इस विधि में केवल अध्यापक बोलता है, छात्र केवल निष्क्रिय श्रोता के रूप में अध्यापक को सुनता है। शिक्षक सक्रिय रहता है और विद्यार्थी सक्रिय रूप से भाग नहीं ले पाते और सुनते-सुनते उनके अन्दर अरुचि पैदा होती है और वह ऊबने लगते हैं। यह एक मार्गीय प्रक्रिया-सी प्रतीत होती है। इसमें अध्यापक मात्र प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल देता है। इस विधि में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच होने वाली अन्तःक्रिया को महत्व नहीं दिया जाता है और कक्षा में उदासीनता का वातावरण

बन जाता है। अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि यह विधि शिक्षक-केन्द्रित विधि है न की विद्यार्थी केन्द्रित।

व्याख्यान विधि के लाभ

विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से पाठ्य-वस्तु से जोड़ने के लिए विज्ञान शिक्षक इस विधि को उपयोग में ला सकता है। अपने प्रेरणादायक एवं रोचक व्याख्यान से बच्चों की विषय में रुचि विकसित कर सकता है।

- ★ इस विधि द्वारा पाठ्य-पुस्तक को संगठित तथा निश्चित क्रम में पढ़ाया जाता है।
- ★ यह विधि अल्पव्ययी है क्योंकि इसमें कोई विशेष उपकरण या प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं होती।
- ★ इसमें एक ही शिक्षक एक साथ अधिक विद्यार्थियों को एक ही समय में बहुत सारी बातें बता सकता है।
- ★ इस विधि द्वारा पाठ्य-वस्तु को सरलता से सीमित समय में पूर्ण कराया जा सकता है।
- ★ व्याख्यान विधि में प्रदर्शन की सहायता से इसे अत्यधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
- ★ इस विधि द्वारा विज्ञान सम्बन्धी ऐतिहासिक घटनाओं को भलि-भाँति पढ़ाया जा सकता है।
- ★ इस विधि द्वारा विद्यार्थियों को महान् वैज्ञानिकों की जीवनी से परिचित कराया जा सकता है।
- ★ कुशल व्याख्यान से व्याख्याता पाठ्य-वस्तु को रुचिकर बना सकता है।
- ★ अधिक विद्यार्थियों की कक्षा में इससे बेहतर कोई विधि उपयुक्त नहीं है।
- ★ इस विधि द्वारा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अधिक लाभ मिल पाता है।

व्याख्यान विधि की दोष :

- ★ इस विधि का मुख्य दोष यह है कि यह छात्र-केन्द्रित न होकर शिक्षक केन्द्रित होती है। इसमें छात्र निष्क्रिय होकर शिक्षक को केवल सुनते हैं।
- ★ कभी-कभी व्याख्यान करते हुए शिक्षक मार्ग से भटककर अन्य क्षेत्रों का व्याख्यान करने लगते हैं।
- ★ विज्ञान विषय का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना होता है। परंतु इस विधि में इस तरह का अवसर प्राप्त नहीं होता। इस विधि में शिक्षक द्वारा ही सब विद्यार्थियों पर थोपा जाता है। ऐसे में विद्यार्थी रूचि नहीं लेते।
- ★ यह मनोवैज्ञानिक विधि नहीं है।
- ★ व्याख्यान विधि में विद्यार्थी निष्क्रिय रहते हैं, इन्हें स्वयं सोचने-विचारने के अवसर प्राप्त नहीं होते हैं।
- ★ तार्किक क्षमता, आलोचनात्मक चिन्तन जैसे उद्देश्य इस विधि द्वारा प्राप्त नहीं किए जा सकते।